Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –4, May - 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.lbp.world

लोककथा एक परिचय लोककथाओं के पुरातन परम्परा स्त्रोत -

डॉ.महेन्द्रसिंह अजितसिंह पवार

हिन्दी विभाग प्रमुख,श्री.वसंतराव नाईक महाविद्यालय, धारणी जि.अमरावती .

प्रस्तावना :

लोककथाएँ कब से प्रचिलित हूई? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमारा ध्यान पुरातनतम साहित्य की ओर जाने लगता है। इसी लिए कुछ विद्वानों ने लोककथाओं की परम्परा का आदि स्त्रोत वेदों में देखा है। और कुछ ने आर्यो के व्यवस्थित होने से पहले ही लोककथाओं के प्रचलन का उल्लेख किया है। इसमें कोई सन्देह नही कि मानव की कथा सुनने की प्रवृत्ती एक आदिम प्रवृत्ति रही है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मानव की सृष्टी के समय से ही लोककथओं का रूप प्रचलित रहा होगा डॉ.सत्येद्र ने इस प्रकार का मत भी व्यक्त किया है। निम्न उदारण में -

"धर्म गाथाओं और लोककथाओं के अध्ययन से यह विदित होता है कि इनका मूल्य बहुत प्राचीन है और ये सम्भवत: उस समय की धुँधली रूपरेखा का युग था, जबकि विविध राष्ट्रों और देशों में विभाजित आर्यजन विभाजन से पूर्व शान्तिपूर्वक किसी एक स्थान पर रहते थे। "

यही नही डा.सत्येन्द्र ने लोककथाओं के उद्भव का विवेचन करते समय इसके विकास की विभिन्न श्रेणियों का भी उल्लेख किया है। जिन में सबसे पहली अवस्था के सम्बन्ध में उन्होने अपना मत स्थापित किया है। कि आदि मानव ने विभिन्न प्रकृति के उपदानों को देखा और उनमे मानवीय क्रियाव्यापारों की समानता का दर्शन किया इस प्रकार के ज्ञान की अनुभूति करना भी लोककथाओं के जन्म की पहली सीढी मानी गयी है।

यह तो रही लोक-कहानियों की प्राचीन परम्परा विषय बात, जिसके सम्बन्ध में किसी को कोई आपत्ती नही हो सकती अब हम भारतवर्ष में लोक कहानियों के आदि प्रचलन पर विचार करेंगे। भारतीय आर्यो का सर्वप्रथम उपलब्ध ग्रंथ है "ऋग्वेद" और इसमें काहानियों के आदि सूत्र का दर्शन करने से पूर्व हमारा ध्यान डा.शंकरलाल यादव की इस मान्यता की ओर जाता है कि लोक कहानियाँ ऋग्वेद के पूर्व मौखिक परम्परा से चली आ रही थी। उन्ही के शब्दों में -

क्हानियों की उद्भावना की आदि भूमि भारत को माना गया है। यों तो कहानी का मौखीक रूप सृष्टी के समारम्भ से ही प्रत्येक देश में पाया जाता है। ये परम्परित कहानियाँ उस देश में घास की तरह अपने आप पैदा हुई है, सभी देशों की वृध्दाओं ने बाल-मनोविनोद के लिए कहानियाँ कही है। किन्तु साहित्यिक कहानियाँ लिखने का श्रेय भारत को है। यहाँ इस साहित्य अभिव्यक्ति की परम्परा एक सुदूर अतीत से विद्यमान मिलती है।

इस प्रकार हम देखते है कि लोक कहानियों की मौखिक परम्परा के बाद कहानी लेखन की परम्परा का उदय भी भारत में सर्व प्रथम हुआ और इसीलिए वैदिक साहित्य में कहानियों के मूल सुत्र देखने को मिलते है। जैसा कि अभी उल्लेख किया जा चुका है, ऋग्वेद ही भारतीय वाड्मय का बीज रूप है, इसीलिए कहानियों का मूल रूप उसी में खोजना चाहिए। लोकसाहित्य के विभिन्न विद्वानों ने ऐसा किया भी है और उन्होने लोक कथाओं के मुल सुत्रों को वैदिक साहित्य में देखा है। डा.मोहनलाल बाबुलकर ने लोककथाओं की प्राचीनता का दर्शन वैदिक साहित्य में किया है। उनके अनुसार -

वैदिक साहित्य कथाओं से भरा पडा है, वेदों की एक-एक ऋचाओं में सम्पूर्ण कथाये उपलब्ध होती है। उदाहरण स्वरूप ऋग्वेद में ऋषी सुन:शेप का आख्यान अपाला, आत्रेयी के नारी चरित्र और संवाद सुक्त में पात्रों का कथेपकथन कथाओं की प्राचीन परम्पराओं के द्योतक है। इन्ही कथाओं में च्यवन भार्गव सुकन्या मानवी की कथा मिलती है।

वैदिक ग्रंथों के उपरांत लोककथाओं का प्राचीन रूप ब्राम्हण ग्रंथों में मिलता है। इन ग्रथों में भी कुछ ऐसे संवाद और चरित्र आये है, जिन्हे हम लोक कहानियों के आदिम चरण के रूप में स्वीकार करते है। शतपथ ब्राम्हणों में पुरूखा और उर्वशी की एक संक्षिप्त कथा मिलती है जिस पर कालिदास का विक्रमोर्वशीय नाटक आधारित रहा है। यही नही उसी कथा के सुत्र ग्रहण करके आधुनिक युग के प्रसिध्द राष्ट्रकवि रामधारीसिंह दिनकर की उर्वशी नामक सफलतम रचना है। इसके अतिरिक्त भी ऐतिरेय ब्राम्हण ग्रन्थों में भी ऐसे व्याख्यान मिल जाते है जिनको लोककथाओं की परम्परा की आदिम कडी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

इसी प्रकार शतपथ ब्राम्हण में वृत्तासुर के वधकी कथा भी आती है तो बाद में दधीचि की दान गाथा के रूप में प्रसिध्द हो गयी।

ब्राम्हण ग्रथों के उपरान्त लोककथाओं का उद्गम स्त्रोत खोजते हुए उपनिषद् साहित्य पर आते है, जिनमें कुछ कथाओं के सुत्र मिलते है। उपनिषद् काल में आकर कहानियों का कुछ नया रूप विकसित हो गया था। गार्गी याज्ञवल्क्य के बीच होने वाला सम्वाद कथा कहने और सुनने का ही रूप है। इसी प्रकार सत्यकाम और जावालि के सम्बाद से भी कहानियों का रूप निखर कर आया है। कंठउपनिषद् में नचिकेता की कथा का मुल आख्यान आया है, जिस पर आधारित कथा को आधुनिक युग के खडीबोली गद्य के आदि प्रर्वत्तक पं.सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान शिर्षक से उपस्थित किया है। इसमें कथावृत्त हतना है कि नचिकेता इन्द्र के पास जाता है और इन्द्र को अपनी मेघा से प्रभावित कर अमरत्व प्राप्ती की विधी का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार अन्य उपनिषदों में भी कुछ ऐसी कथाएँ मिलती है जिनमें से उपनिषद् में आयी हुई अग्नि और यक्ष की सरस कथा भी है। ये सभी कथाएँ उपनिषद काल में आकर कुछ लौकिक धरातल पर आ गयी है। क्यों कि वेदों और ब्राम्हण ग्रंथों में देव इत्यादि पात्रों के रूप में थे जबकि उपनिषदों में इन कहानियों के पात्र है। कोई ऋषि अथवा राजा।

उपनिषदों के काल के उपरान्त रामायण और महाभारत काल में जिस आख्यान पध्दती का विकास दिखाई देता है उसके बीच की कडी के रूप में पौराणिक युग आता है।

पुराणों में प्राप्त लोककथाअें के रूपों से कही अधिक महत्व दिया गया है। बृहत्कथा नामक ग्रंथ को। उा.कृष्णदेव उपाध्याय ने इसीलिए लोककथाओं की प्राचीन परम्परा का उल्लेख करते हुए बृहत्कथा को पहला स्थान दिया है। जबकि डा.शंकर लाल यादव ने पंचतंत्र और हितोपदेश को क्रमश: प्रथम और दितीय क्रम प्रदान किया। विवेचन में किये गये इस क्रम परिवर्तन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डा.यादव पंचतंत्र को अधिक महत्व देते है और डा.उपाध्याय बृहत्कथा को जब हम पंचतंत्र हितोपदेश बृहत्कथा का परिचय देते है तो हमारी प्रधान दृष्टी काल क्रमपर होनी चाहिए। इसलिए प्राचीनता की दृष्टी से हम रामायण और महाभारत के काल के उपरांत संस्कृत साहित्य में मिलने वाले कथा साहित्य को विवेचना का विषय बनायेंगे और बृहद्कथा को पहले क्रम पर नही रखेंगे क्योंकि यह प्राकृत भाषा का ग्रंथ है। वैदिक साहित्य और पुराण साहित्य के उपरान्त लोककथा के परम्परा वाही रूप को देखने के लिए संस्कृत के कथा साहित्य का चिर ऋणी होना पडेगा। संस्कृत साहित्य के व्दारा कथा साहित्य के विकास में किये गये योगदान के सम्बन्ध में डा.शंकरलाल यादव के निम्न कथन से संस्कृत साहित्य के महत्व का प्रतिपादन हो जाता है। इसके अतिरिक्त संस्कृत में मिलने वाले आख्यान साहित्य का विश्व साहित्य में एक गौरवपूर्ण स्थान है संस्कृत के लिए आख्यान किसी प्रख्यात पौराणिक एवं ऐतिहासिक पात्र अथवा कथावस्तु के आधार का लिए खडे है। कई आख्यानों की पृष्ठभूमि में विशुध्द कल्पना है इनमें स्थान स्थान पर कौतूहल घटना वैचिाय, हास्य-विनोद गम्भीर व्देष और काव्य रस भी मिलता है।

संस्कृत साहित्य में प्राप्त आख्यान साहित्य को कुछ विद्वानों ने दो वर्गो में विभाजित किया है।

१. नीतिकथा २. लोककथा।

इस प्रकार हम देखते है कि संस्कृत भाषा के साहित्य में जो कथा साहित्य का विकसित रूप देखने को मिला है।

संस्कृत साहित्य में प्राप्त नीती कथाएँ लोक कथाओं के इतिहास क्रम में अपना प्रमुख स्थान रखती है। पंचतंत्र और हितोपदेश संस्कृत आख्यान के प्रमुख ग्रंथ है जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे प्रस्तुत है।

पंचतंत्र -

यह ग्रंथ नीति-कथाओं का भण्डार है। इसकी रचना के पीछे रचनाकार का उद्देश सम्भवत: यह था कि कुछ रोचक कथाओं के माध्यम से नीती विषयक उपदेश उसके श्रोताओं तक पहूंचा दिये जाए। इसके रचयिता ने जिस उद्देश से इस ग्रंथ को लिखा है वह है राजकुमारों को नीति की शिक्षा देना। परंतु इस ग्रंथ में लिखी हूई नीति-कथाओं का इतना व्यापक प्रभाव देखा जाता है कि संसार में अनेक ग्रंथो की विविध भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ। डा.शंकरलाल यादव के शब्दों में इस ग्रंथ की विशेषताओं को निम्न प्रकार प्रदर्शित किया गया है।

विश्व-साहित्य को भातीय साहित्य की एक ही महती देन है। ये पंचतंत्र की कहानियॉ बहुत दूर दूर की सैर कर चुकी है। इनके भ्रमण की कहानी स्वयं बडी रोचक है। संस्कृत की इन कहानियों का संसार में इतना अधिक प्रचार हुआ है कि यह विश्व साहित्य का एक अंग बन गई है।

हितोपदेश -

जैसा कि इस ग्रंथ के नाम से विदित होता है कि इस ग्रंथ में नाना प्रकार के उपदेशों का प्राधान्य है। इस पर पंचतंत्र का भी प्रभाव है। यह ग्रंथ अपनी १८ कहानियॉ ही मौलिक रूप में दे पाया है। शेष २५ कहानियों पर पंचतंत्र का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इस ग्रंथ का महत्व एक अन्य दृष्टी से भी है। कि इसकी शैली इतनी बोधगम्य है कि अपनी ओर अनायास ही आकर्षित कर लेती है। इसके साथ ही साथ भाषा भी पंचतंत्र की अपेक्षा सरल है जो कथा साहित्य की प्रमुख विशेषता है।

वैताल पंचविंशतिका -

यह कथा गंथ संग्रह मात्र है जिसमें कथा सरित्सागर, पंचतंत्र तथा बृहत्कथा मंजरी में प्राप्त २५ कहानियों को संगृहीत किया गया है। इन कहानियों की पध्दति विशिष्ट प्रकार की है। जिसे हम प्रहेलिका पध्दति कह सकते है। जिज्ञासोत्पादक गूढ रहस्य की पृष्ठभूमि पर तैयार की गयी ये कथाएँ एक ओर मनोरंजन में भी बेजोड है, दूरी ओर औत्सुक्य उत्पन्न करने में अभूतपूर्व है। इन कहानियों के संग्रहकर्ता शिवदास नामक विद्वान है। आगे चलकर हिन्दी में भी इस कथा ग्रंथ का रूपान्तर वैताल पच्चीसी के नाम से प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ के अन्तर्गत सिंहासन व्दात्रिंश का स्थान माना जाता है। धारा नगरी के राजा भोज से सम्बध्द इस कथा संग्रह की ३२ कहानियाँ अनूठी कल्पना के अनुसार रची गयी है। वह विक्रमादित्य के सिंहासन में बैठी हुई ३२ प्रतिमाओं के मुख से वर्णित कथाओं के रूप में संजोयी गयी है। यह कथा संग्रह कथात्मक साहित्य की उन विशिष्टताओं से परिपूर्ण नही है। जो वैताल पंचविशतिका के सम्बन्ध में कही जा चुकी है। कहने का तात्पर्य यह है कि कौतूहल जिज्ञासा मनोरंजन से सम्बध्द उपलब्धीयाँ उतनी उत्कृष्ट नही है जितनी वैताल पंचविशतिका में है। इस कथा संग्रह का भी हिन्दी में अनुवाद हुआ है जो सिंहासन बत्तीसी के नाम से पुकारा जाता है।

जातक कथाएँ -

गौतम बुध्द के जीवन से सम्बध्द कतिपय कथानको को प्रस्तुत करने वाली कथाओं को जातक नाम दिया गया है। भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने इन जातक कथाओं का संग्रह किया है जो न्दिी साहित्य सम्मेलन से ४ भागों में प्रकाशित हुआ है। इन सभी ग्रंथों में आने वाली जातक कथाओं की संख्या ५५० है। पाली भाषा में लिखी गयी ये कथाए गौतक बुध्द के जन्म जन्मान्तरों की विशिष्ट घटनाओं की परिचायक है। किसी जन्म में गौतम बन्दर बन रहे हे किसी में खरगोश पंडित किसी में कोई अन्य पशु पक्षी प्रत्येक जातक के अन्त में बुध्द के पूर्व जन्म की संगति बिठाई गयी है। इन जातक कथाओं की उपादेयता बौध्द धर्म को तो है ही साथ ही इन कथाओं के माध्यम से तत्कालीन भारत की सामाजिक राजनितीक, आर्थिक स्थिती का भी परिचय प्राप्त होता है।

इस प्रकार हम देखते है कि लोककथाओं का बीज रूप वैदिक साहित्य में मिलता है और उसके उपरान्त संस्कृत साहित्य में धर्मोपदेशप्रधान कहानियों तथा मनोरंजन प्रधान कहानियों के रूप में उनका विकास होते हुए पाली और प्राकृत भाषाओं में भी कथा-साहित्य की सृष्टी होती रही है। यही सुदीर्घ काल से चली आने वाली परम्परा हिन्दी साहित्य में आकर विकसित होती रही। इसीलिए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है। कि वैदिक संस्कृती से लेकर जो भाषा-विकास की प्रक्रिया में उचित सोपान प्राप्त हुए उन्ही में कथाओं के संग्रह और उनकी संरचना का कार्य सम्पन्न होता रहा और अब तक उसका निरन्तर विकास होता रहा है। आधुनिक युग में भी नही कहानियों में लोककथाओं के अनेक तत्व दृष्टीगोचर होते है। इसलिए लोककथाओं की इस परम्परा को वेदो से लेकर आज तक के साहित्य में देख सकते है।

संदर्भ ग्रंथ -

लोक साहित्य सिध्दांत और प्रयोग - डॉ.श्रीराम शर्मा